Dainik Bhaskar (Indore), 07th February 2026, Page – 01 & Contd. 09

समीक्षा बैठक में खुलासा • इसे देश की पहली रिमोट कंट्रोल वेधशाला बनाने का है सपना

लोकार्पण के सालभर बाद भी डोंगला की वेधशाला में ऑटोमेशन अधूरा, सॉफ्टवेयर भी हार्डवेयर से लिंक नहीं

भास्कर संवाददाता | इंदौर

उज्जैन जिले के डोंगला गांव में स्थापित वेधशाला को देश की पहली रिमोट कंट्रोल वेधशाला बनाने का सपना एक साल बाद भी अधूरा है। 2013 में मैपकॉस्ट द्वारा स्थापित इस वेधशाला का मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 3 जनवरी 2025 को लोकार्पण किया था। तब दावा किया गया था कि इस वेधशाला को रिसर्चर्स देश में कहीं से भी ऑपरेट और इस्तेमाल कर सकेंगे। लेकिन लोकार्पण के एक साल बाद भी यह अधूरी है। न डोम का ऑटो रोटेशन सिस्टम तैयार हो सका है, न ही टेलीस्कोप और डोम का सिंक्रोनाइजेशन हुआ। न स्लिट ऑटो क्लोजिंग सिस्टम चालू

है, न सॉफ्टवेयर हार्डवेयर से लिंक हो सका है। रिमोट एक्सेस भी अब तक टेस्टिंग में है।

पिछले साल दिसंबर में आईआईटी इंदौर की तकनीकी समीक्षा बैठक में यह खुलासा हुआ था। इस बैठक में बताया गया कि ऑटोमेशन का काम 15 फरवरी 2026 तक पूरा होने की संभावना है। शेष | पेज 9 पर

तो क्या सीएम को भी दी गई अधूरी जानकारी

यह मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का ड्रीम प्रोजेक्ट रहा है। विधायक रहते हुए उन्होंने भूमि चयन से लेकर निर्माण तक व्यक्तिगत रुचि ली। मुख्यमंत्री बनने के बाद विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग भी उनके पास रहा। इसके बावजूद अधिकारियों ने उन्हें पूरी जानकारी नहीं देते हुए उनसे अधूरी परियोजना को 'पूर्ण' बताकर लोकार्पण करा दिया। सरकारी सोशल मीडिया अकाउंट्स से फोटो और पोस्ट डाले गए। बैनर, पोस्टर, प्रेस रिलीज जारी कर दावा किया गया कि प्रदेश की पहली ऑटोमेटिक वेधशाला शुरू हो गई। लेकिन जमीन पर हकीकत कुछ और है।

काम पूरा होने पर ही लोकार्पण हुआ। बाद में अन्य उपकरण लगाए जा रहे हैं। – डॉ. अनिल कोठारी, डीजी, मैपकॉस्ट

Page – 01

पहले पेज का शेष

लोकार्पण के सालभर बाद भी डोंगला की वेधशाला में ऑटोमेशन अधूरा...

इसके बाद भास्कर ने प्रोजेक्ट की फाइलें, टेंडर डॉक्यूमेंट, तकनीकी नोट्स और मीटिंग मिनट्स की जांच की। इसमें सच्चाई और साफ हो गई। यह ऑटोमेशन प्रोजेक्ट अगस्त 2023 में 31.35 लाख रुपए की लागत से शुरू हुआ था। आईआईटी इंदौर इसका तकनीकी क्रियान्वयन कर रहा है। दरअसल, डोंगला गांव से कर्क रेखा गुजरती है। इसी वजह से यह स्थान खगोल विज्ञान में खास महत्व रखता है। मैपकॉस्ट का यहां वेधशाला स्थापित करने के पीछे उद्देश्य था कि राष्ट्रीय स्तर पर खगोलीय अनुसंधान को बढ़ावा मिले और उज्जैन सहित प्रदेश अंतरिक्ष के क्षेत्र में पुनः नाम कमा सके। अफसरों ने दावा किया था कि यह प्रदेश का पहला इंटरनेशनल रिसर्च स्टेशन बनेगा। इसरो, आयुका जैसे संस्थान इससे जुड़ेंगे। देशभर के 2000 से ज्यादा शोधार्थी लाभान्वित होंगे। लेकिन फील्ड में न डाटा है, न रिसर्च, न कोई आउटपुट।

Contd. Page-09